आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

यदि आप पूरे वर्ष भर प्रचार किए जाने वाले सुसमाचार को अनदेखा करते रहते हैं, तो आपके साथ क्या होता है?

दुनिया में सामान्यतः दो प्रकार के लोग होते हैं।
पहला समूह उन लोगों का है जो जैसे ही सुसमाचार सुनते हैं, उनका हृदय तुरंत पिघल जाता है। उनका विवेक उन्हें झकझोर देता है, और वे तुरंत पश्चाताप कर परमेश्वर की ओर लौटने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे लोगों का उदाहरण हमें पिन्तेकुस्त के दिन देखने को मिलता है। जब प्रेरित पतरस ने अपना मुँह खोलकर उन लोगों को उपदेश देना आरम्भ किया, जो अन्य भाषाएँ बोलने के कारण आश्चर्य कर रहे थे, तब उसके थोड़े से वचनों ने ही अनेक लोगों के हृदय बदल दिए।

प्रेरितों के काम 2:37-38
“यह सुनकर वे बहुत ही व्याकुल हुए और पतरस और अन्य
प्रेरितों से पूछा, ‘हे भाइयो, हम क्या करें?’
पतरस ने उनसे कहा, ‘मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने पापों
की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।’”

दूसरा समूह उन लोगों का है, जिन्हें चाहे जितना सुसमाचार सुनाया जाए, चाहे कितने ही चमत्कार दिखाए जाएँ, चाहे कितने ही

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

आत्मिक और प्रभावशाली वचन बोले जाएँ, चाहे सुबह से शाम तक उपदेश क्यों न हो—फिर भी वे अपने हृदय को कठोर ही बनाए रखते हैं।

ऐसे लोगों का उदाहरण हमें प्रेरित पौलुस के जीवन में मिलता है, जब वह रोम पहुँचा और वहाँ के लोगों को सुबह से शाम तक परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाता रहा।

प्रेरितों के काम 28:23-24
“उन्होंने एक दिन ठहराया और बहुत लोग उसके डेरे पर उसके पास आए। वह सुबह से लेकर साँझ तक उन्हें परमेश्वर के राज्य के
विषय में समझाता और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं
की पुस्तकों से यीशु के विषय में प्रमाण देकर उन्हें समझाता रहा।
कुछ ने उसकी बातों पर विश्वास किया, और कुछ ने विश्वास नहीं किया।”

आज भी बहुत से लोग वर्ष के आरम्भ से अंत तक सुसमाचार सुनते हैं। वे उसे सड़कों पर सुनते हैं, रेडियो पर सुनते हैं, टेलीविजन पर सुनते हैं, और इंटरनेट पर भी सुनते हैं—फिर भी वे अपने हृदय को कठोर बनाए रखते हैं। वे इसे महत्वहीन समझते हैं। लेकिन वे नहीं जानते कि उनका जीवन गंभीर खतरे में है।

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

प्रिय भाई/बहन, मसीह का अनुग्रह सूर्य की तरह नहीं है कि वह प्रतिदिन अवश्य उदय होगा। यदि सूर्य आज अस्त हो जाए, तो हमें आशा रहती है कि वह कल फिर उदय होगा। परन्तु यदि मसीह का अनुग्रह आपको छोड़ दे, तो वह सदा के लिए चला जाता है।

आप यह नहीं कह सकते कि “मैं किसी दिन परमेश्वर की ओर लौट आऊँगा।” क्योंकि परमेश्वर की ओर लौटना पवित्र आत्मा की प्रेरणा से होता है, न कि केवल मनुष्य की इच्छा से।

यूहन्ना 6:44
“कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता जिसने मुझे भेजा है
उसे खींच न ले।”

यदि वह आत्मा जो आपको परमेश्वर की ओर खींचती है, आपके भीतर नहीं है, तो आप अपनी शक्ति या प्रयास से परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर सकते। पहले जब आप उपदेश सुनते थे तो आपका हृदय द्रवित होता था, पर अब नहीं होता। पहले आपको परमेश्वर के वचनों की प्यास थी, अब वह प्यास नहीं रही। यह चिन्ह है कि वह आत्मिक आकर्षण आपसे हटा लिया गया है।

तब बाइबल आपको केवल एक साधारण पुस्तक लगेगी। आप उसका उपहास

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

करेंगे, या उस पर विश्वास नहीं करेंगे। आप कहेंगे कि मसीही लोग भ्रमित हैं; आप कहेंगे कि यीशु वापस नहीं आएँगे, कि कोई स्वर्गारोहण (रैप्चर) नहीं है। आप स्वयं को सब कुछ जानने वाला समझेंगे। आप उस व्यक्ति से भिन्न नहीं रहेंगे जिसने कभी परमेश्वर को जाना ही नहीं।

और सबसे दुखद बात यह है कि ऐसा करते समय आपको अपने भीतर कोई दोषबोध भी नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा बहुत पहले आपसे दूर हो चुका होगा।

स्वतंत्रता का वर्ष और दास का निर्णय

पुराने नियम में लिखा है कि जब मुक्ति का वर्ष आता था, तो दासों को स्वतंत्र किया जाता था। पर यदि कोई दास अपनी इच्छा से कहे कि “मैं अपने स्वामी को नहीं छोड़ूँगा; मैं सदा उसका दास बना रहूँगा,” तो उसके स्वामी को उसका कान छेद देना होता था—जो इस बात का चिन्ह था कि वह जीवन भर उसी का दास रहेगा।

व्यवस्थाविवरण 15:17
“तब तू सूआ लेकर उसके कान को द्वार या चौखट से लगाकर छेद
देना; तब वह सदा के लिये तेरा दास रहेगा।”

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

आज परमेश्वर हमें यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा मुक्ति का वर्ष घोषित करते हैं—कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)।

पर यदि हम इस अनुग्रह का उपहास करें, पाप में बने रहें, और शैतान की दासता को ही चुनें—तो हम यह निर्णय अपनी इच्छा से ले रहे हैं।

आत्मिक संसार में इसका अर्थ यह है कि आप उसी स्वामी के हो जाते हैं जिसे आपने चुना है। यदि आप बार-बार अनुग्रह को ठुकराते हैं, तो एक समय ऐसा आता है जब परमेश्वर आपको आपके निर्णय पर छोड़ देते हैं।

आज निर्णय लें

जनवरी से दिसंबर तक आप सुसमाचार सुनते रहे। परमेश्वर ने आपको जीवन, श्वास और अवसर दिया। क्या आप सोचते हैं कि यह अवसर सदा रहेगा?

बाइबल कहती है:

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

गलातियों 6:7
“धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता,
क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।”

यदि आप सच में आज यीशु मसीह की ओर लौटना चाहते हैं और अपने नए वर्ष की शुरुआत उद्धार के साथ करना चाहते हैं, तो यह सबसे बुद्धिमानी भरा निर्णय होगा।

जहाँ आप हैं, कुछ समय अलग होकर घुटने टेकें और विश्वास के साथ यह प्रार्थना करें:

प्रार्थना

हे परमेश्वर पिता,
मैं आपके सामने आता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पापी हूँ और मैंने लंबे समय तक आपके विरुद्ध पाप किया है। मैं आपके न्याय का पात्र हूँ। परन्तु आपने अपने वचन में कहा है कि आप दयालु परमेश्वर हैं। आज मैं अपने सारे पापों से सच्चे मन से पश्चाताप करता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि यीशु मसीह प्रभु हैं और वही संसार के उद्धारकर्ता हैं। कृपया अपने पवित्र पुत्र के लहू से मुझे शुद्ध कीजिए और आज से मुझे नया जीवन दीजिए।

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

प्रभु यीशु, मुझे ग्रहण करने और मुझे क्षमा करने के लिये धन्यवाद।
आमीन।

यदि आपने विश्वास के साथ यह प्रार्थना की है, तो अब अपने पश्चाताप को कर्मों से सिद्ध करें। पापमय जीवन छोड़ दें—व्यभिचार, मद्यपान, चोरी, रिश्वत, अशुद्ध जीवन—सबको त्याग दें। जिन लोगों ने आपको दुख पहुँचाया है उन्हें हृदय से क्षमा करें।

फिर किसी सच्ची आत्मिक कलीसिया से जुड़ें, बाइबल का अध्ययन करें, और पवित्र बपतिस्मा ग्रहण करें, जैसा लिखा है:

प्रेरितों के काम 2:38
“मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।”

इन बातों का पालन कीजिए, और प्रभु आपके साथ रहेंगे।

आप सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं तो आपके साथ क्या होता है?

आप अत्यन्त धन्य हों।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp